नालन्दा विश्वविद्यालय

जब संसार के अन्य देश असम्य जीवन व्यतीत कर रहे थे, उस समय भी प्राचीन भारत में उच्चकोटि की संस्कृत फलीभूत हो रही थी। इसका मूल कारण यह था कि भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा का प्रसार हो गया था। मनुष्य एवं समाज के अध्यात्मिक और बौद्धिक उत्कर्ष शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव माना जाता है।

विद्या और ज्ञान की प्राप्ति से ही मनुष्य श्रेष्ठ और उत्तम माना गया है। विद्या के महत्व को बताते हुए कहा गया है कि विद्या माता की तरह रक्षा करती है, पिता की तरह शुभ कार्यों में सफलता प्रदान करती है और पत्नी की तरह खेदों को दूर करती है तथा सफलता में प्रसन्नता प्रदान करती है। समस्त लौकिक सुखों की प्राप्ति विद्या के माध्यम से ही सम्भव माना गया है।

प्राचीन काल से ही भारत में शिक्षा प्रदान करने के शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की गयी थी। बैदिक काल के मात्र गुरुकुल में जाकर ही शिक्षा प्राप्त किया जाता था। कलान्तर में विशाल और भव्य शिक्षा केन्द्रों का विकास हुआ जिनकी व्यवस्था के लिए राजा की ओर से कुछ गाँव विद्वान शिक्षक ब्राह्मणों को प्रदान कर दिये जाते थे। हिन्दू मन्दिरों की तरह बौद्ध विहार भी शिक्षा केन्द्र के रूप में विकसित हुए जिसमें नालन्दा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय आदि विशेष प्रसिद्ध है।

प्राचीन बौद्ध इमारतों के खण्डहर नालन्दा विश्वविद्यालय विहार राज्य की राजधानी पटना से दक्षिण पूर्व की दिशा में ५५ मील पर और नालन्दा से लगभग ७ मील की दूरी पर राजगृह भी स्थित है।

प्राचीन भारत के उतरार्द्ध में नालन्दा विश्वविद्यालय चौथी शताब्दी ई. में विश्व प्रसिद्ध हुआ था यह एक आवासीय विश्वविद्यालय था। यहाँ खुदायी के बाद कई छोटे-बड़े स्तुप तथा विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के रहने और पढ़ने-लिखने के लिए महाविद्यालयों के भग्नावषेश प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा एक कतार में बुद्ध के कई छोटे बड़े मंदिरों के अवशेष भी उपलब्ध है। खुदाई से प्राप्त मृदभण्ड, छोटे-बड़े बर्तन, मिट्टी की मूर्तियाँ और मुहरों के आधार पर तत्कालीन नालन्दा विश्वविद्यालय का अध्ययन किया जा सकता है।

चौथी शताब्दी का यह विश्वविद्यालय मगधराज्य में शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र था। नालन्दा विश्वविद्यालय को विद्यार्थी अपनी उच्चकोटि का नैतिकता एवम् विद्वता के लिए दूर देशों तक प्रसिद्ध थे। गुप्त राजाओं ने नालन्दा विश्वविद्यालय के सम्वर्द्धन में प्रचुर मात्रा में दान दिये थे। इसमें रहने वाले हजारों विद्यार्थियों के व्यय उन १०० से अधिक गाँवों के आय से चलता था जो विशेष रूप से इसके व्यय के लिए दान में दिये गये थे।

चीनी यात्री हवेनसांग के अनुसार नालन्दा विश्वविद्यालय के विद्यार्थी अपनी विद्वाता एवं आदर्श चरित्र के कारण भारत भर में आर्दश विद्यार्थी समझे जाते थे। नालन्दा विश्वविद्यालय की प्रसिद्धि के कारण चीन, तिब्बत और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों से अनेक विद्यार्थी विभिन्न विषयों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए नालन्दा विश्वविद्यालय आया करते थे। नालन्दा विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना इतना कठिन था कि यदि दस विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा में बैठते थे, तो उनमें से दो या तीन ही सफल हो पाते थे।

इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थी अपना पूरा समय वाद-विवाद में लगाते थे। हवेनसांग ने लिखा है कि नालन्दा विश्वविद्यालय के विद्यार्थी और शिक्षक वाद-विवाद और पढ़ने में इतना अभ्यस्त थे कि प्रतिदिन पढ़ाई के आठ घंठे उन लोगों के लिए बहुत ही कम जान पड़ते थे। अनुशासन कायम रखने के लिए विद्यार्थियों के साथ कई नियम थे। जो विद्यार्थी इन नियमों की अवहेलना करते थे, उनको दण्ड दिया जाता था।

इस विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध स्नातकों की संख्या बहुत अधिक थी। इत्सिंग के नालन्दा विश्वविद्यालय में तीन हजार से अधिक विद्यार्थी विभिन्न विषयों में शिक्षा प्राप्त करते थे। अध्यापकों की संख्या लगभग १५०० थी। जिनमें से प्रतिदिन लगभग एक सौ अध्यापक अपना व्याख्यान देते थे। कुछ पुरातत्वेताओं का मत है कि नालन्दा विश्वविद्यालय में लगभग दस हजार निवास करते थे।

तिब्बत के ऐतिहासिक साधनों से यह ज्ञात होता है कि नालन्दा विश्वविद्यालय में रत्न सागर, रत्न दधी और रत्न रंजक नामक तीन पुस्तकालय थे। इस विश्वविद्यालय में आठ महाविद्यालय थे। नालन्दा विश्वविद्यालय के पहले कुलपति धर्मपाल नाम के विद्वान थे जो काँची के निवासी थे। नालन्दा विश्वविद्यालय में मुख्यरूप से महायान सम्प्रदाय की अठारहवें शाखाओं के सिद्धांतो की शिक्षा दी जाती थी। साथ ही साथ चारो वेदो, छः वेदांग, पुराण, न्याय दर्शन, मीमांषा, दर्शन, धर्मशास्त्र, चित्रकला, विज्ञान, गणित, ज्योतिष, व्याकरण, आत्मज्ञान हेतु विद्या, तर्कष्शास्त्र, शब्द विद्या, चिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद, अर्थवेद, मंत्र विद्या और साख्य दर्शन भी पढ़ाये जाते थे। इस विश्वविद्यालय में अध्यात्मिक और धार्मिक दोनों प्रकार के विषय पढ़ाये जाते थे। स्थापत्य की दृष्टि से यह सातवीं सथाब्दी का सबसे बड़ा और सुंदर विहार था। इससे दस मील की दूरी पर उदन्तपुरी महाविहार स्थित था।

नालन्दा विश्वविद्यालय और उदन्तपुरी माहविहार के बीच बराबर सम्पर्क बना रहा। हाल में इस विश्वविद्यालय के भवन में जो भगनावेश मिले हैं, उनसे चीनी यात्रियों के कथन की पुष्टि होती है। यहाँ पर कई बौद्ध मन्दिर और स्तूप होने से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि यह शिक्षा केन्द्र मुख्य रूप से बौद्ध धर्म से प्रभावित रहा था। गुप्त शासकों की यह धर्म सहिष्णुता थी कि वे हिन्दू शासक होते हुए भी बौद्धधर्म से सम्बन्धित विश्वविद्यालय के विकास के सम्बन्ध में अपना योगदान देते रहे थे।

तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में १२०३ ई. में मुस्लिम शासक बख्तियार खिजली के आक्रमण के कारण अनेक भारतीय शिक्षा मंदिरों का नाश हुआ उनमें नालन्दा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय भी थे।

Vihangama, IGNCA Newsletter, Vol. I (January – February 2004)